

— अन्नु *aufsuchen, nachforschen; zu erlangen suchen, streben nach, verlangen nach*: शतारमन्विच्छन्मम् AV. 6, 37, 1. 134, 3. यामन्विच्छद्विषा विश्वकर्मा 12, 1, 60. अन्विमं यज्ञमन्विच्छाम्: AIT. Br. 3, 45. तं खनत् इवान्वीषुस्तमन्विच्छन् CAT. Br. 1, 2, 3, 7. 5, 9. 6, 2, 2. 6, 2, 1, 1. 3, 1, 22. 2, 1. 11, 4, 2, 20. कृत तमात्मानमन्विच्छामो यमात्मानमन्विष्य u. s. w. KĀND. Up. 8, 7, 2. 4, 1, 7. P. 5, 2, 75. नित्तेपस्यापकर्तारमनित्तारमेव च । सर्वैरुपायैरन्विच्छेत्पथैश्चैव वैदिकैः ॥ M. 8, 190. राजतो धनमन्विच्छेत् 4, 33. न तैः समयमन्विच्छेत् 10, 53. आ मृत्योः अयमन्विच्छेत् 4, 137, 252. 6, 84, 8, 187. 11, 232. बुद्धो शरणमन्विच्छेत् BHAG. 2, 49. पितृषो गतिमन्विच्छेत् R. 1, 42, 2. 3, 8, 2. 6, 20, 1. 5, 33, 25. अन्विषेप तदा सीतो रावणास्य पुरे शुभे 12, 5. 14, 39. RAGH. 11, 50. अन्विषेप महाबुद्धिः पशुं गोभिः सकृत्सशः R. 1, 61, 9. इतस्ततो ऽन्विष्य HIT. 22, 2. लोकादन्विष्य भूयश्च विस्तरम् R. 1, 3, 1. निगूण गा अन्वेष्टुम् RV. ANUKR. bei ŚĪ. zu RV. 1, 6, 5. N. 16, 24. R. 3, 70, 16. 75, 11. 5, 3, 1. RAGH. 12, 59. त्तिप्रं वनमिदं सौम्य नरसंघैः समततः । लुब्धैश्च सहितैरेभिस्त्वमन्वेषितुमर्हसि R. 2, 99, 2. जनस्थानमिदं भूयस्त्वमन्वेषितुमर्हसि 3, 72, 5. 7. — pass.: अन्विष्यतो कुत्रचित्किंचित्सह्यम् PĀNĀT. 69, 5. प्रागपि सो ऽस्माभिर्यथः प्रत्यादिष्ट एव । किं वृथा तर्केषान्विष्यते ÇĀK. 72, 10. तदा किमन्विष्यते VET. 32, 18. — partic. अन्विष्ट *gesucht* AK. 3, 2, 54. H. 1491. अन्विष्टमृगैः किरातैः KUMĀRAS. 1, 15. अन्विष्टवांस्तदा शूरो जनस्थानमितस्ततः R. 5, 32, 17. — caus. gleichb. mit dem simpl.: तद्यत्त्वत्सलिलमन्वेषयामि MRĪKH. 48, 17. तस्य पादपङ्क्तिमन्वेषयन् PĀNĀT. 33, 13. अन्वेषय किंचित्सह्यम् 214, 19. अन्वेषयन्पत्रिणाणामासादा वनस्पतिम् III, 146. कालमन्वेषयती *auf den geeigneten Augenblick wartend* 182, 24. याम् (वृत्तिम्) अन्वेषयताम् (नृणाम्) BHARTR. 3, 98. partic. अन्वेषित AK. 3, 2, 54. H. 1491. कदाचिदपि नास्माभिरन्वेषितः (ऋदः) PĀNĀT. 77, 11. — Vgl. अन्वेषे fgg.

— पर्यन्नु *aufsuchen, nachforschen*: अन्वगच्छदनुष्पाणिः पर्यन्वेष्टुमितस्ततः MBh. 1, 1668.

— समन्नु *durchsuchen*: आश्रमं समन्विष्य R. 3, 66, 1.

— अश्रिम् *aufsuchen, erstreben*: निधिं निधिष्या अश्रियेनमिच्छात् AV. 12, 3, 42. 34. 41. महादाव नष्टेष्वप्यल्पं वेच्छति पतरो वाव तयोर्भाष्य इवामीच्छति AIT. Br. 3, 9. partic. अश्रीष्ट *erstrebt, erwünscht, genehm, lieb* AK. 3, 2, 3. इम एवासौ लोकाः प्रीता अश्रीष्टा भवन्ति TS. 2, 4, 10, 3. mit dem gen. der Person PĀNĀT. 77, 24. HIT. I, 10. m. *Liebling, Geliebter* PĀNĀT. I, 75. ŚĀB. D. 33, 19. superl. अश्रीष्टतम *überaus lieb*: अकृमद्य तवाश्रीष्टतमान्मत्स्यान्समानोप पचती तिष्ठामि PĀNĀT. 262, 18. m. *der Geliebteste* ŚĀB. D. 33, 5.

— अश्री partic. ईष्ट *verlangt, gewünscht*: एष्टा नरा निचेतारा च कर्षीः RV. 1, 184, 2. एष्टा राय एष्टा वामानि प्रेषे भगाय AIT. Br. 1, 26. VS. 5, 7.

— परि *herumsuchen nach*: भगवत्तं वा अकृमेभिः सर्वैरारिष्विः पर्येषियम् (lies: पर्येषियम्) KĀND. Up. 1, 11, 2.

— प्रति 1) *sich richten auf Etwas, zustreben*: सतो बन्धुमसति निर्विन्दन्कृदि प्रतीष्या क्वयौ मनीषा RV. 10, 129, 4. — 2) *empfangen*: स्तुषो प्रतीच्छे मे कन्याम् ŚĀV. 3, 12. कृशाश्वतनयान् — प्रतीच्छे मम (von mir) R. 1, 30, 8. 4, 9, 3. प्रतीच्छे चैनाम् (सीताम्) 1, 73, 25. 28. सत्क्रियाम् 32, 14. असत्यसंधस्य — नैव देवा न पितरः प्रतीच्छन्तीति नः श्रुतम् 2, 109, 18. गदा शक्रजिता जिये तं प्रतीषेप वालिभिः BHATT. 14, 36. तस्य सम्पन्नपूताभिः स्नानमग्निः प्रतीच्छतः RAGH. 17, 16. (Jemdes Worte oder Befehle) ge-

*hörig aufnehmen, ihnen folgen, darauf achten*: वचनं न प्रतीच्छता R. 1, 34, 30. आश्रां प्रतीषुः BHATT. 3, 43.

— संप्रति *beistimmen, zusagen*: संप्रतीच्छे मे R. 1, 32, 13.

4. इष्, ईषति und ईषते nur in Verbindung mit अन्नु zu belegen.

— Vgl. एष्.

— अन्नु *suchen, nachforschen, durchsuchen*: यमन्वेषसि राजानम् N. 12, 21. पतिमन्वेषतीम् 24. ते पुराणि सराष्ट्राणि — अन्वेषतो नलं राजन्वाधि-जगम्: 17, 45. देशमन्यं डुराधर्ममन्वेषन् R. 4, 48, 7. अन्वेषमाणा MBh. 1, 5253. 6585. 3, 2379. 2452. 12664. R. 3, 74, 3. 4, 48, 4. *hinterhergehen, verfolgen*: केवलं परपुरुषानन्वेषमाणा परिभ्रमति PĀNĀT. 225, 24. काव्यस्यान्वेषते गतिम् R. 1, 3, 2.

5. इष्, ईषति nur in Verbindung mit अन्नु durch zwei Beispiele zu belegen: तमेवान्विष *den suche auf* MBh. 3, 15753. तं च मृषिकं खादितुं यत्नादन्विषन्विडालो मुनिना दृष्टः HIT. 113, 8 (v. l. अन्विष्यन्). Ein इष्, इषति wird unter den verbis *der Bewegung* aufgezählt NAIKH. 2, 14. Nir. 9, 18. — Vgl. इष्.

II. इष् 1) adj. *sich rasch bewegend, eilend* in अश्रमिष्. — 2) f. *Wunsch* in इष्टुर. — Ist identisch mit I. इष्.

III. इष् f. im sg. in allen casus, im pl. nur im nom. acc. ईषम्, selte-

ner ईषम्) und gen. gebräuchlich. 1) *Trank, Labung, Erquickung* NAIKH.

1, 7. Nir. 6, 26. 11, 14. इष्मूर्त्तं मुन्नितं सुप्तमप्युः RV. 2, 19, 8. 10, 20, 10.

Es ist in dieser Verbindung mit ऊर्त्तं *Trank und Speise*, aber zugleich

*Kraft und Saft*, besonders häufig gebraucht. Nir. 11, 29. VS. 1, 1. 12,

105. AV. 4, 39, 2. विदाहूर्त्तं शतक्रतुर्विदादिषम् RV. 2, 22, 4. उच्यते वा-

मिषे मधु AV. 7, 73, 1. मधुमतीर्त्तं इषेस्कृधि VS. 7, 2. अन्मवीवा इषेस्करत्

RV. 3, 62, 14. इषा तं वर्धद्द्या पयोभिः 7, 68, 9. वर्कतं पीवरीरिषेः 8, 5, 20.

इषं जरीत्रे नृष्योऽं न पीषेः 4, 16, 21. धेनुं न इषं पिन्वत्तमसक्राम् 6, 63, 8.

33, 4. 1, 63, 8. 86, 5. 2, 34, 4. धुत्तस्व पिप्युषीमिषम् VĀLAKH. 3, 15. In den

meisten dieser Stellen ist Bed. 2. mit eingeschlossen. Im Besondern:

a) *Spende, Trankopfer*: यद्देो दिवो अर्षण इषो वा मद्देो गृहे RV. 8, 26,

17. पञ्चरीरिषेः 1, 3, 1. स्वदेस्व कृष्या समिषो दिदीहि 3, 54, 22. सं वा

कर्मणा समिषा किन्नामि 7, 69, 1. 1, 129, 7. जूषतो यज्ञमदुक्तौ ऽनमवीवा इषो

मकीः 3, 22, 4. — b) *die erquickenden Gewässer des Himmels* Nir. 10,

26. अर्षावृषोदिष इन्द्रः परीवृताः RV. 1, 130, 3. दिव्या इषेः 8, 3, 21. इषं

स्वरभिजापत्तं धूर्तयः 168, 2. 3, 30, 11. 33, 1. अर्षामूर्त्तं दिवस्पारिं । अर्षत्मा

बृकृतीरिषेः 9, 49, 1. 10, 17, 8. — 2) *Saft* so v. a. *Kraft, Frische; Wohl-*

*sein, Gedeihen; Wohlstand*; sg. und pl.: समस्मे भूषतं नरोत्तं न पिप्यु-

षीरिषेः *theilet uns Kräfte mit sprudelnd wie eine Quelle* RV. 10, 143,

6 (s. auch u. 1.). सोप्रांमनित्यपिषमा वेदेह Muth AV. 5, 20, 11. इषा स हि-

षस्तेरुदास्वान्वंसद्रियम् RV. 6, 68, 5. वाजोय अर्वस इषे च राये 17, 14. 4,

180, 2. 181, 1. 2, 6, 5. VS. 2, 18. इषे राये रमस्व सकृसे व्युन्न ऊर्त्ते अर्षत्याय

13, 35. नाकस्य पृष्ठे समिषा मद्दे AV. 7, 80, 1. इषमा वृत्तीषो वर्षिष्ठान्

RV. 6, 47, 9. दधातु नः सविता सुप्रजाविषम् 4, 53, 7. प्रजावृत्तीरिष आ धे-

त्तमस्मे 32, 16. सुप्रजावृत्तीम् 1, 111, 2. वीरवृत्तीम् 12, 11. 96, 8. 8, 43, 15.

स्वपत्या इषे 1, 34, 11. अश्रीवतीः 30, 17. 8, 3, 10. वाजवृत्तीः 1, 34, 3. गोमं-

तीः 48, 15. 5, 79, 8. रविनीः 1, 9, 8. रायत्योषेण समिषा मद्देतः VS. 11, 75.

एषा वीतीष्ट तन्वे वयो विद्यामिषे वृत्तं जरीदानुम् RV. 1, 163, 15. AIT. Br.

1, 26. Ein dat. zu इष् ist ईषये, neben welchem keine andere Form zu